कृषक संवाद 30 दिसंबर तक 29 प्रखंडों को कैशलेस करने का है लक्ष्य, सीएम ने कहा

कैशलेस बनाने में किसानों की होगी महत्वपूर्ण भूमिका

पंचायतनामा डेस्क

मुख्यमंत्री रघुवर दास ने कहा है कि 31 मार्च 2017 तक झारखंड कैशलेस हो जायेगा, जिसकी शुरुआत हो चुकी है. श्री दास 11 दिसंबर को विधानसभा मैदान में कैशलेस ट्रांजेक्शन पर आयोजित कृषक संवाद कार्यक्रम में किसानों को संबोधित करते हुए ये बाते कहीं. मुख्यमंत्री ने सभा में मौजूद किसानों को समझाया कि कैशलेस का मतलब पूरी तरह बिना कैश के काम करना नहीं है, बल्कि कम से कम नकद का उपयोग करना ही कैशलेस है. झारखंड को इस मामले में भारत का पहला राज्य बनाना है. इसके लिए किसानों को आगे आना होगा, क्योंकि राज्य की सबसे बड़ी आबादी किसानों की है. मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड सरकार किसानों का क्रय शक्ति बढ़ाना चाहती है. अगले वित्तीय वर्ष में किसानों के लिए कई योजनाएं आयेंगी. एक-एक बीपीएल को सरकार रोजगार या स्वरोजगार से जोड़ेगी. पूरे राज्य में वर्ग नौ और 10 के छात्रों का कैशलेस का मास्टर ट्रेनर बनाया जायेगा. सखी मंडल, आनंगबाड़ी सेविका और सहायिका, एएनएम, सहिया को भी कैशलेस का मास्टर ट्रेनर बनाया जायेगा.

सही दाम में खरीदेंगे खाद व बीज

कृषि, पशुपालन व सहकारिता विभाग के मंत्री रणधीर कुमार सिंह ने कहा कि किसान कैशलेस विधि का उपयोग कर भ्रष्टाचार पर नियंत्रण रख सकेंगे. सही कीमत पर खाद-बीज की खरीद कर सकेंगे. खाद-बीज की ब्लैकमार्केटिंग पर नजर रखी जा सकेगी. इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन छोटे स्तर पर भी होंगे. इससे किसानों को जोड़ा जायेगा.

रांची के धुर्वा स्थित विधानसभा मैदान में कैशलेस ट्रांजेक्शन पर आयोजित कृषक संवाद का उद्घाटन करते मुख्यमंत्री रघुवर दास.

यह देश सेवा का काम

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह देश सेवा का काम है. इससे टैक्स चोरी रुकेगी. भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा. टैक्स बढ़ेगा. इसमें आनेवाले पैसे का उपयोग देश सेवा में किया जायेगा. सरकार ने 30 दिसंबर तक 29 प्रखंडों को कैशलेस करने का लक्ष्य रखा है.

मुख्यमंत्री ने कहा

- अगले वित्तीय वर्ष में किसानों के लिए आयेंगी कई योजनाएं
- 30 दिसंबर तक 29 प्रखंडों को कैशलेस करने का है लक्ष्य
- पूरे राज्य में वर्ग नौ और 10 के छात्रों का कैशलेस का मास्टर ट्रेनर बनाया जायेगा
- सखी मंडल, आनंगबाड़ी सेविका और सहायिका, एएनएम, सहिया भी बनेंगी मास्टर

गांव का विकास होगा, तभी कृषक उन्नत होंगे : मुख्य सचिव

राज्य की मुख्य सचिव राजबाला वर्मा ने कहा कि गांव का विकास जरूरी है. गांव विकसित होगा तो कृषक उन्नत होंगे. कृषि बजट पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जा रहा है. राज्य के कई जिलों में तो 85 फीसदी खेती कृषि पर आधारित है. विकास आयुक्त अमित खरे ने कहा कि कैशलेस ट्रांजेक्शन काफी सुविधाजनक है. जैसे पहले मोबाइल के उपयोग में परेशानी होती थी, उसी तरह की परेशानी शुरुआती दौर में हो सकती है. हालांकि, बाद में यह काफी आसान होगा. यह देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए भी जरूरी है. नीति आयोग ने देश के 50 वैसी पंचायतों को सम्मानित करने का निर्णय लिये है, जो पहले कैशलेस हो जायेंगे. कार्यक्रम को विधायक गंगोत्री कुजूर ने भी संबोधित किया.

ग्रामीणों की मददगार बनीं सुचिता

पूजा गर्ग

आठ नवंबर की मध्यरात्रि से जब 500 और 1000 रुपये के पुराने नोट के चलन पर रोक लगाने का एलान किया गया तो इस एलान ने लोगों को बेचैन कर दिया. जिसने भी नोटबंदी की खबर सुनी, एटीएम की ओर चल दिये. मगर देश की आबादी का एक ऐसा हिस्सा ऐसा भी था जो अभी तक चैन की नींद सो रहा था. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार झारखंड की आबादी का 76 फीसदी हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं. यहां आज भी शहरों के अपेक्षा एटीएम की उपलब्धता कम है ऐसे में आजीवीका मिशन के अंतर्गत काम कर रही बैंक सखी ने अपना किरदार बखुबी निभाया. उन्हीं में से एक 22 वर्षीय बैंक सखी हैं - सुचिता वर्मा. इन्होंने सरकार के नोटबंदी के फैसले से ग्रामीणों को सूचित किया.

सुचिता वर्मा गिरडीह जिला के करणपुरा कलस्टर के बिजलीबाथान गाँव की रहने वाली हैं. सुचिता सितंबर 2015 से बेंगाबाद स्थित झारखंड ग्रामीण बैंक में बैंक सखी के रूप में कार्यरत हैं. इनका काम दिन दयाल अंत्योदय योजना के अंतर्गत बने आजीवीका सखी मंडल की बैंक स्तर पर मदद करना है. इसी काम से सुचिता की पहचान बनी है और आजीविका का जरिया भी. इस काम से सुचिता को 3000 रुपये तक की आमदनी हो जाती है. सुचिता वर्मा कहती हैं -'जब मैं नौ नवंबर की सुबह हर दिन की तरह बैंक पहुंची और उन्हें नोटबंदी की खबर मिली तो उनके दिमाग में सिर्फ एक ही बात आयी की किसतरह मैं इस सूचना को जल्दी से जल्दी सभी आजीविका सखी मंडल के सदस्य तक पहुंचाऊ. उसने आव देखा ना ताव और उलटे पैर अपने गाँव की तरफ चल दी तथा गांव जाकर आजीविका मंडल की सदस्यों व ग्रामीणों को नोदबंदी की खबर से अवगत करायी. इसके बाद आजीविका की महिला सदस्यों ने 500 और 1000 रुपये के पुराने नोट को बैंक में जमा करा पायी. सुचिता वर्मा अब तक 50 से अधिक आजीविका सखी मंडल का बैंक लिंकेज करवा चुकी हैं तथा लगभग 200 व्यक्तिगत बैंक खाते भी खुलवा चुकी हैं जो की इस नोटबंदी के समय में काफी मददगार साबित हो रहा है. सुचिता वर्मा बैंक की स्थायी कर्मचारी नहीं हैं, फिर भी बैंक में सुचिता की अपनी एक अलग पहचान है. बैंक मैनेजर उनके साथ स्वयं बैठकर सखी मंडल की ग्रेडिंग करते हैं. बैंक सखी के रूप में बैंक में काम करते हुये वह बैंक का बहुत काम सिख चुकी है. जैसे- पासबुक प्रिंट करना, कम्प्युटर पर एंट्री करना आदि. इस सफर में उन्हें महिला सम्मेलन में झारखंड के मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास से भी मिलने का मौका मिला और मुख्यमंत्री से अन्य बैंक सखियों को बैंक में अच्छा बैठने का स्थान प्रदान करने की मांग की.

स्नातक की छात्रा हैं सुचिता

ग्रामीणों को जानकारी देतीं बैंक सखी सुचिता वर्मा.

सुचिता वर्मा बैंक सखी होने के साथ एक पत्नी, मां तथा स्नातक स्तर के तीसरे सत्र की विद्यार्थी भी हैं. वो अपनी पढ़ाई पूरी करके आगे बैंक की तैयारी करना चाहती हैं ताकि बैंक सखी का सफर कभी ना खत्म हो, बल्कि समय के साथ साथ गुणवत्ता से परिपूर्ण होता जाये.

बैंक सखी का कार्य प्रशंसनीय

झारखंड ग्रामीण बैंक (बेंगाबाद) के बैंक मैनेजर अशोक कुमार भरना, बैंक सखी सुचिता वर्मा के कार्य को सराहना करते हुए कहते हैं – वह बहुत अच्छा काम कर रहीं है. नोटबंदी का बीता एक महीना जितना कठिन आम जनता के लिए रहा है उतना ही बैंक कर्मचारियों के लिए भी रहा है. बैंक की कर्मचारी ना होते हुये भी इस कठिन समय में इन्होंने अपना कर्तव्य बखूबी निभाया है. सुचिता वर्मा ने 100 से भी अधिक लोगों का प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा व जीवन ज्योति बीमा तथा 40 से भी अधिक लोगों का अटल पेंशन योजना में नामकरण करवा चुकी हैं. बैंक सखी ने यह काम आसानी से कर दिया जो कि बैंक के लिए थोड़ा कठिन था.

अशोक कुमार भरना, बैंक मैनेजर

अपने धान के खेत में मोहिनी देवी.

आधुनिक खेती की डगर पर ग्रामीण महिलाएं

ज्योति रानी

धान की खेती करना प्रारंपरिक कृषि का एक हिस्सा है. झारखंड राज्य का लगभग 80 फीसद किसान धान की खेती करते हैं. कृषि भूमि का आकार काफी छोटा होता है फिर भी उपज ठीक-ठाक हो जाती है. कृषि में उत्पादकता बढ़ाने के लिए अब महिलाएं नये तकनीक का इस्तेमाल कर रही हैं. ये महिलाएं आजीविका सखी मंडल से जुड़कर खेती के नये तकनीक अपना रही हैं. जेएसएलपीएस के सहयोग से इन ग्रामीण महिलाओं को खेती करने की श्रीविधि तकनीक की जानकारी दी गयी है. इस विधि से खेती करने पर धान की पैदावार में बढ़ोतरी हुयी है.इस विधि से खेती करने पर धान की फसलों को कम पानी की आवश्यकता पड़ती हैं.

मोहिनी देवी, गुमला जिले के पालकोट प्रखंड के सेमरा गाँव की रहने वाली हैं. इन्होंने अपने 10 डिसमिल जमीन पर श्रीविधि से धान की खेती की. मोहिनी ने पाया कि इस विधि से धान की खेती करने पर फसल को पानी की कम आवश्यकता होती है, फसल के उत्पादन में कम लागत लगता है और अधिक उत्पादन होने से मुनाफा भी बढ़ जाता है.

एक दूसरा उदाहरण **रांचो उरायिन** की है. यह गुमला जिला के भरनो ब्लाक के हेतटोली गाँव की रहने वाली हैं. उरायिन ने आजीविक कृषक मित्र की सहायता लेकर अपने खेत में 300 केला का पौधा लगाया. यह पहला अवसर था जब उरायिन केला की खेती कर रही थी. केला के खेती से उरायिन को अच्छी आमदनी होने लगी है. केला के पौधों के बीच में लहसुन, प्याज और मिर्चों की खेती की जा रही है. इसके कारण ये महिलाएं एक साथ तीन या अधिक फसल उगा रही हैं और अपने आय में वृधि कर रही हैं. झारखंड का जलवायु वागबानी आधारित खेती के लिए अधिक अनुकूल है. ऐसे में वागबानी की खेती कर किसान राज्य व अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं. आजीविका सखी मंडल से जुड़कर महिलाएं जागरुक हो रही हैं और नये चीजों को अपनाने में पीछे नहीं हटती हैं. महिलाएं समझ गयीं है कि बदलाव लाने के लिए बदलाव से जुड़ना जरुरी है. नये व आधुनिक तरीके को अपनाकर महिलाएं खेती कर रही हैं और इसका उन्हें फायदा भी मिल रहा है. इन सभी प्रयासों का एक ही मकसद है- ग्रामीण किसानों के आय को बढ़ाना और इन्हें गरीबी से बाहर लाना है. मौका माहौल बदल देती है, इसी तर्ज पर कार्य करते हुये जेएसएलपीएस राज्य की गरीब महिलाओं तक अनेक प्रकार के आजीविका के साधन उपलब्ध करा रहा है. इसका मकसद उनकी आर्थिक स्थिति में बदलाव लाना है.

किसानों के तरक्की में कृषक मित्र की भूमिका सराहनीय

कृषक मित्र ग्रामीण किसानों के लिए एक बड़ा सहायक साबित हो रहा है. कृषक मित्रों को जेएसएलपीएस की मदद से कृषि संबंधी प्रशिक्षण दिया जाता है. इन्ही का सहयोग पाकर रांचो उरायिन व अन्य महिलाओं ने खेती में नये तकनीक के इस्तेमाल धान के उत्पादन में वृधि कर पायी हैं और नगदी फसलों का उत्पादन कर पा रही हैं. बेलिबादा जेएसएलपीएस द्वारा चयनित प्रशिक्षित आजीविका कृषक मित्र हैं, जो आजीविका सखी मंडल से जुडी महिलायों को नये तथा आधुनिक खेती की तकनीक की जानकारी देती हैं. साथ ही जैविक खाद बनाने की विधि भी बताती है, जिससे उपज अच्छी होती है और लागत भी कम पड़ता है. कृषक मित्र बाजार की मांग अनुसार भी खेती करने की सलाह देती है.

केले का पौधा लगातीं रांचो उरायिन.

इ-रिक्शा चला कर पुरुषों को टक्कर दे रही हैं धानो हेंब्रोम

संजय सरदार

पूर्वी सिंहभूम जिला के पोटका प्रखंड के प्रमुख चौक हाता के आसपास इन दिनों इ-रिक्शा चलाती एक महिला आपको आसानी से नजर आ जायेगी. वह महिला सशक्तिकरण की एक बेहतरीन उदाहरण पेश कर रही हैं. इनका नाम धानी हेंब्रोम है,जो राजनगर प्रखंड के जाटा गांव की रहनेवाली है. यह महिला ई-रिक्शा चलाकर अपनी पुरे परिवार का भरण-पोषण कर रही है. साथ ही बच्चों को पढ़ा भी रही हैं. धानी हेंब्रोम को करूणा सेचेन संस्था की ओर से अनुदान पर यह ई-रिक्शा दिया गया है. यह पिछले एक साल से इ-रिक्शा चला रही हैं. इससे होने वाली आय से धानी हेंब्रोम के परिवार का खर्च चलता है. इन्हें इसी पैसे से लोन भी चुकाती हैं. इनके पति राधो हेंब्रोम साधारण किसान है. धानी हेंब्रोम की चार बच्चे है. तीन बेटी और एक बेटा. वह पहले दैनिक मजदूरी का काम करती थी, लेकिन बाद में उनके एक सहयोगी ने करूणा सेचेन संस्था से एक ई रिक्शा दिलवाया. इस ई-रिक्शा की कीमत एक लाख बीस हजार रुपये है. लेकिन धानी हेंब्रोम को सिर्फ पचास हजार रुपये जमा करना है. शुरूआत में जब ई-रिक्शा चलाने के लिए बाजार में आयी, तो लोगों ने तरह-तरह की बातें की. लेकिन धानी हेंब्रोम ने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया और अपना काम जारी रखा. आज भीड़-भाड़े वाले जगहों में भी आसानी से रिक्शा चला रही हैं.

धानी हेंब्रोम महिला सशक्तीकरण की उदाहरण है : उपेंद्र नाथ सरदार

जुड़ी पंचायत के पूर्व मुखिया उपेंद्र नाथ सरदार कहते हैं –धानी एकमात्र महिला है, जो पिछले एक साल से ई-रिक्शा चला रही हैं. वह रियल में महिला सशक्तिकरण की एक उदाहरण है. इस महिला की साहस और मेहनत से सभी को प्रेरणा लेने की जरूरत है.

प्रखंड - पोटका

जिला - पूर्वी सिंहभूम

ई-रिक्शा चलाती धानो हेंब्रोम.